International Journal of Sanskrit Research 2024; 10(3): 28-31

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2024; 10(3): 28-31
© 2024 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 10-03-2024
Accepted: 16-04-2024

Manjeet
Ph.D. Scholar, Department of Sanskrit, Baba Mastnath University, Rohtak, Haryana, India

Corresponding Author:
Manjeet
Ph.D. Scholar, Department of Sanskrit, Baba Mastnath University, Rohtak, Haryana, India

आधुनिक भारत में संस्कृत भाषा का अध्ययन की स्थिति

Manjeet

DOI: https://doi.org/10.22271/23947519.2024.v10.i3a.2365

सारांश
संस्कृत भाषा पृथ्वी की प्राचीन और शुद्धतम भाषा है। इसके निरंतर महत्व के बावजूद, आधुनिक भारत में संस्कृत के अध्ययन को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा है। संस्कृत को थोड़े ही लोग समझ पाते हैं। यहां तक कि जो लोग संस्कृत भाषा पढ़ा रहे हैं, वे भी इसे ठीक से बोलने में असमर्थ हैं। यहां इस लेख में, हम भारत में संस्कृत भाषा की चुनौतियों, लाभों और स्थिति पर चर्चा करेंगे।

कुटशब्द: संस्कृत भाषा, संस्कृत साहित्य, भारतीय भाषा

प्रस्तावना
संस्कृत भारत की एक शास्त्रीय भाषा है और हजारों वर्षों से भारतीय सांस्कृति और बौद्धिकता का एक अभिन्न अंग रही है। संस्कृत भारत की एक प्राचीन भाषा है, माना जाता है कि इसका उपयोग चौथी सहस्राब्दी ईसा पूर्व और 5वीं शताब्दी के बीच किया गया था।[1] इसे दुनिया की आदिम भाषाओं में से एक माना जाता है, और इसका साहित्य और व्याकरण सदियों से अध्ययन का विषय रहा है। ऋग्वेद संस्कृत साहित्य का सबसे पुराना और पहला ग्रंथ माना जाता है। इस तथ्य के बावजूद कि संस्कृत कभी भारत में प्रमुख भाषा थी, इसका उपयोग कम हो गया है। संस्कृत और संस्कृत साहित्य के अध्ययन को आधुनिक भारत में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा है। आधुनिक भारत में, संस्कृत भाषा और साहित्य के अध्ययन का बहुत महत्व है।

भारतीय सभ्यता के प्रारंभ से ही संस्कृत भारत में अध्ययन का माध्यम थी। संस्कृत शिक्षा गुरुकुल, आश्रम, मंदिर, टोला आदि के माध्यम से किया गया था। संस्कृत का अध्ययन करने में गुरुकुल और आश्रम आज भी मौजूद हैं 19 वीं सदी के अंत और 20 वीं सदी की शुरुआत में, संस्कृत भारतीय विश्वविद्यालयों में अध्ययन का एक विषय बन गया, और यह पूरे देश के स्कूलों और विश्वविद्यालयों में पढ़ाया जाने लगा।

आधुनिक भारत में संस्कृत भाषा और साहित्य का अध्ययन कई कारणों से महत्वपूर्ण है। सबसे पहले, संस्कृत को सबसे पुरानी और सबसे परिष्कृत इंडो-यूरोपीय भाषाओं में से एक माना जाता है, और भारतीय सांस्कृतिक और बौद्धिक विरासत के विकास में एक प्रमुख भूमिका निभाई है। प्राचीन भारतीय संस्कृति के बारे में जानकारी का एक मूल्यवान स्रोत संस्कृत भाषा को भी माना जाता है।

आधुनिक भारत में संस्कृत के निरंतर अध्ययन का एक मुख्य कारण इसकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है। संस्कृत साहित्य में महाकाव्य कविताओं, भजनों, ग्रंथ, नाटक, और दार्शनिक सहित कार्यों का एक विशाल निकाय शामिल है, इन कार्यों को भारतीय साहित्य के शुरुआती उदाहरणों में से माना जाता है और प्राचीन भारतीय संस्कृति और धर्म में बहुमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।

इसके ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व के अलावा, संस्कृत का अध्ययन आधुनिक भाषाविज्ञान और तुलनात्मक भाषाशास्त्र विकास के लिए भी महत्वपूर्ण है। संस्कृत में एक जटिल व्याकरण और शब्दावली है जो भाषाई विश्लेषण के लिए अच्छी तरह से अनुकूल है, और अन्य प्राचीन भाषाओं जैसे लैटिन और ग्रीक के अध्ययन के लिए एक मॉडल के रूप में उपयोग किया गया हैं।

आधुनिक भारत में संस्कृत के अध्ययन का एक अन्य कारण कई अन्य भारतीय भाषाएँ के विकास में इसका महत्व हैं। संस्कृत को कई आधुनिक भारतीय भाषाओं का मूल माना जाता है, और भारत की भाषाई और सांस्कृतिक विरासत की गहरी समझ प्रदान करने के लिए इसका अध्ययन हो सकता है । इसके शैक्षणिक महत्व के अलावा, संस्कृत भाषा और साहित्य का अध्ययन, भारत की सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित करने में महत्वपूर्ण है। संस्कृत को भारत की समृद्ध संस्कृति और विरासत का प्रतीक माना जाता है, इसका अध्ययन अतीत के साथ इस संबंध को बनाए रखने में मदद करता है।

इन लाभों और इसके निरंतर महत्व के बावजूद, आधुनिक भारत में संस्कृत के अध्ययन को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा है सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक बोली जाने वाली भाषा के रूप में संस्कृत का पतन है, जिसके परिणामस्वरूप भाषा पढ़ने और लिखने में सक्षम लोगों की संख्या में गिरावट । एक और बड़ी चुनौती है कि संस्कृत के अध्ययन के लिए संसाधनों और समर्थन की कमी। कई स्कूलों और विश्वविद्यालयों के पास संसाधन नहीं हैं

संस्कृत के अध्ययन का समर्थन करने के लिए अक्सर योग्य शिक्षकों की कमी होती है। इसके अतिरिक्त संस्कृत शिक्षा प्रदान करने वाले संस्थानों की संख्या में गिरावट, और स्कूलों में संस्कृत भाषा को कई छात्रों को अब नहीं पढ़ाया जाता है एक और मुख्य चुनौती रोजमर्रा की जिंदगी में संस्कृत के घटते उपयोग की है। भारत के कई हिस्सों में, संस्कृत का अब बोली जाने वाली भाषा के रूप में उपयोग नहीं किया जाता है, और इसे खोजना मुश्किल होता जा रहा है जो लोग भाषा को पढ़ने और समझने में सक्षम हैं। हालांकि, हाल के वर्षों में, भारत में संस्कृत के अध्ययन में रुचि का पुनरुत्थान हुआ है, विशेष रूप से शिक्षाविदों और बुद्धिजीवियों के बीच। भारत की सांस्कृतिक और बौद्धिक विरासत का संरक्षण, और आधुनिक भाषाविज्ञान के विकास संस्कृत के महत्व की मान्यता से प्रेरित है। वर्तमान समय में, अनुकूल सरकारी नीतियों और वित्तीय सहायता के कारण संस्कृत भाषा पुनरुत्थान का अनुभव कर रही हैं। संस्कृत पढ़ने वाले छात्रों की संख्या को कम नहीं कहा जा सकता है और संस्कृत पढ़ने वाले छात्र काफी संतोषजनक हैं। संस्कृत के क्षेत्र में शोधकर्ताओं की संख्या भी कितनी स्वीकार्य है? शोधगंगा 2022 के आंकड़ों के अनुसार, संस्कृत पर 6118 शोध थे, जो अधिक है

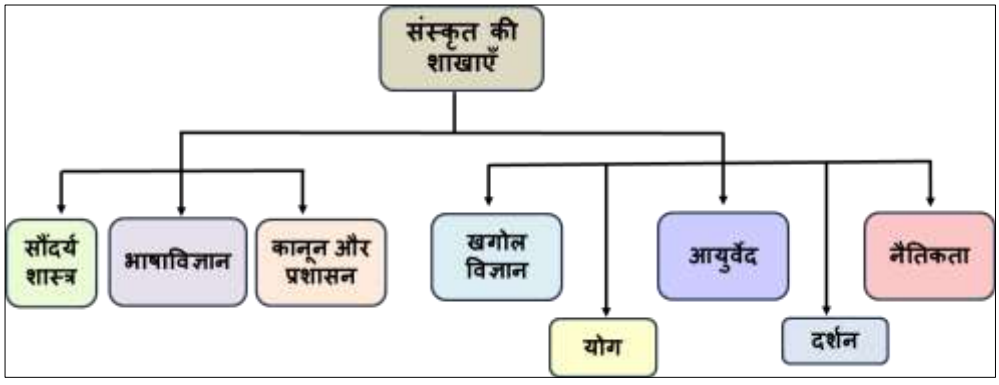

चित्र 1. संस्कृत की शाखाएँ

प्राक्कल्पना: राजनीति विज्ञान और भूगोल जैसे विषयों पर शोध की संख्या की तुलना में कुछ संस्कृतप्रेमी संगठन संस्कृत भाषा के प्रचार में असाधारण योगदान दे रहे हैं। संस्कृत शिक्षा के लिए बीएचयू, संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, एसएलबीएसएनएसयू, सीएसयू, एनएसयू, आदि जैसे प्रसिद्ध संस्कृत संस्थान, कई महत्वपूर्ण शाखाएँ हैं जो संस्कृत का अध्ययन आज भी प्रासंगिक और महत्वपूर्ण बनाती हैं । इन शाखाओं में आधुनिकता और व्यापक शोध के लिए विशेष रूप से अन्वेषण और अनुसंधान की काफी संभावनाएं हैं। ये शाखाएं नए विचारों की खोज करने और गहराई से जाने के अवसर प्रदान करती हैं (चित्र.1)।

सौंदर्यशास्त्र

संस्कृत सौंदर्यशास्त्र साहित्य का एक अभिन्न अंग है, जो प्राचीन भारत में 3,000 वर्षों पहले उत्पन्न हुआ है। संस्कृत सौंदर्यशास्त्र कला, साहित्य और प्रदर्शन की सुंदरता और सामंजस्य पर जोर देता है, और इसमें शामिल हैं रस (भावनात्मक स्वाद), ध्वनि (विचारोत्तेजकता), और अलंकार (अलंकरण) जैसी अवधारणाएं। एस्थेटिशियन ने दर्शकों की व्यस्तता, रूप और सामग्री के बीच, कलाकार की भूमिका और रिश्ते के महत्व पर भी चर्चा की। इन विचारों ने न केवल भारतीय कला और साहित्य को प्रभावित किया बल्कि अन्य सांस्कृतिक पूरे एशिया में परंपराएं भी प्रभावित की। संस्कृत सौंदर्यशास्त्र का अध्ययन भारतीय संस्कृति विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बना हुआ है।[2]

भाषाविज्ञान

संस्कृत भाषाविज्ञान संस्कृत के व्याकरण, स्वर विज्ञान और शब्दावली का अध्ययन करता है, जो भारत की सबसे पुरानी और सबसे शास्त्रीय भाषाओं में से एक है। भाषा और समय के साथ इसका विकास, संस्कृत की जटिलताओं को समझने पर केंद्रित है संस्कृत भाषाविज्ञान भी, अन्य इंडो-यूरोपीय भाषाओं और क्षेत्र की अन्य भाषाओं पर इसका प्रभाव के बीच संबंधों की जांच करता है।[3]

कानून और प्रशासन: कानून और प्रशासन को संस्कृत साहित्य में बड़े पैमाने पर प्रलेखित किया गया था, विशेष रूप से प्राचीन भारत में। कानून, शासन और प्रशासन के बारे में विस्तृत जानकारी मनुस्मृति, अर्थशास्त्र और धर्मशास्त्र जैसे ग्रंथ में शामिल हैं। ये ग्रंथ प्राचीन भारत की राजनीतिक व्यवस्था, जिसमें आपराधिक और नागरिक कानून, न्याय प्रशासन और राजनीतिक शामिल हैं, को कानूनी अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। शासकों के कर्तव्यों और जिम्मेदारियों, कानून को बनाए रखने के महत्व और आदेश, और न्याय बनाए रखने में न्यायपालिका की भूमिका. इन प्राचीन संस्कृत कार्यों का अध्ययन जारी है।[4]

खगोल विज्ञान: खगोल विज्ञान प्राचीन भारत में अध्ययन का एक प्रमुख क्षेत्र था और 1995 में बड़े पैमाने पर प्रलेखित किया गया था। संस्कृत साहित्य, वेद, ज्योतिष शास्त्र, खगोलीय टिप्पणियों, गणनाओं पर व्यापक जानकारी और सूर्य सिद्धांत, ग्रहण जैसी घटनाएं, खगोलीय पिंडों की गति और ब्रह्मांड का निर्माण और विनाश जैसे संस्कृत कार्यों का ये ग्रंथ खगोलीय वर्णन करते हैं। संस्कृत खगोल विज्ञान इस क्षेत्र में खगोल विज्ञान के विकास पर गहरा प्रभाव पड़ा और इसमें भारत से खगोलीय ज्ञान महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।[5, 6]

योग: योग की जड़ें संस्कृत साहित्य में हैं, उपनिषदों में सबसे पहले संदर्भ दिखाई देते हैं। वही योग पर सबसे व्यापक पाठ भगवद गीता है, जो राजकुमार अर्जुन और भगवान कृष्ण के बीचकर्म, कर्तव्य और आध्यात्मिक मुक्ति की प्रकृति पर एक संवाद प्रस्तुत करता है । पतंजलि का योगसूत्र एक और है जो योग के आठ गुना मार्ग को रेखांकित करता है, जिसमें शारीरिक मुद्राएं, सांस नियंत्रण, और ध्यान शामिल हैं।[7]

आयुर्वेद: आयुर्वेद संस्कृत साहित्य में जड़ों के साथ चिकित्सा की एक प्राचीन प्रणाली है। यह माना जाता है दुनिया में स्वास्थ्य सेवा के सबसे पुराने रूपों में से एक और इस विश्वास पर आधारित है कि मन, शरीर और आत्मा के बीच एक नाजुक संतुलन पर, स्वास्थ्य और कल्याण निर्भर करता है। आयुर्वेद का मूलभूत पाठ, चरक संहिता, शरीर रचना विज्ञान, शरीर विज्ञान, निदान और विभिन्न के उपचार पर व्यापक जानकारी प्रदान करती है। एक अन्य महत्वपूर्ण पाठ, सुश्रुत संहिता, सर्जिकल तकनीकों और हर्बल के उपयोग पर केंद्रित है।[8]

दर्शन: दर्शन प्राचीन भारत में जांच का एक प्रमुख क्षेत्र था, और इसके सिद्धांत और संस्कृत साहित्य में प्रथाओं को बड़े पैमाने पर प्रलेखित किया गया था। उपनिषदों जैसी संस्कृत रचनाएँ, भगवद गीता, और वेदांत सूत्र में विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला पर दार्शनिक चर्चाएं शामिल हैं, जिनमें वास्तविकता, आत्म, नैतिकता और आध्यात्मिकता की प्रकृति शामिल हैं। ये ग्रंथ व्यक्ति और ब्रह्मांड, कर्म और पुनर्जन्म की अवधारणा, और मुक्ति और ज्ञान का मार्ग के बीच संबंधों का भी पता लगाते हैं। संस्कृत दर्शन का भारत में दार्शनिक विचारों के विकास पर गहरा प्रभाव पड़ा और इसके विचारों का अध्ययन और चर्चा आज भी जारी है।[9]

नैतिकता: कई ग्रंथों के साथ संस्कृत साहित्य में नैतिकता, पुण्य व्यवहार के महत्व और कार्यों के परिणामों को संबोधित करना एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं । उदाहरण के लिए, महाभारत, राजा जनक और ऋषि याज्ञवल्क्य के बीच स्वयं की प्रकृति पर चेतना, और नैतिकता का प्रसिद्ध संवाद शामिल है। भगवद गीता धर्म की अवधारणा, या सही कार्रवाई और पूरा करने में इसके महत्व पर चर्चा करती है। संस्कृत साहित्य नैतिक और नैतिक दुविधाओं को भी संबोधित करता है, जैसे कि रामायण में धार्मिकता और अधर्म के बीच संघर्ष। ये ग्रंथ प्रासंगिक बने हुए हैं आज भारत और दुनिया भर में नैतिक और नैतिक मूल्यों को आकार देना जारी है

निष्कर्ष

अंत में, संस्कृत भाषा और साहित्य का अध्ययन किसके लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है? भारत की सांस्कृतिक और बौद्धिक विरासत के संरक्षण के साथ-साथ आधुनिक भाषाविज्ञान के विकास के लिए और तुलनात्मक भाषाशास्त्र के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत में और अतीत से जुड़ाव में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। निरंतर समर्थन और संसाधनों के साथ, संस्कृत का अध्ययन फलता-फूलता रह सकता है और भावी पीढ़ियों के लिए भारत की सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित कर सकता है।

अभिस्वीकृति: लेखक बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा को विशेष धन्यवाद देना चाहते हैं कि उन्होंने मुझे शोध करने का अवसर दिया

ग्रंथ सूची

1. देवकुमार। दास, संस्कृत, साहिति इर इतिहास. कोलकाता, श्री बलराम प्रकाशनी, 2012.
2. वाचस्पति गैरेला, कौटिल्य अर्थशास्त्र. वाराणसी: चौखंभा विद्याभवन 1984.
3. राधावल्लव त्रिपाठी, संस्कृत, संहिता, का समग्र इतिहास। वाराणसी: चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, 2020.
4. एएल बाशम, द वंडर दैट वाज़ इंडिया: ए सर्वे ऑफ़ द कल्चर ऑफ़ द कल्चर मुसलमानों के आने से पहले भारतीय उप-महाद्वीप। लंदन: सिडगविक और जैक्सन, 1954.
5. उमाशंकर शर्मा, संस्कृत साहित्य का इतिहास। वाराणसी: चौखंभ भारती प्रकाशन, 2022.
6. विद्याधर शर्मा गुलेरी, संस्ष् ट मे विज्ञाना. नई दिल्ली। संस्कृत भारती, 2000.
7. बलदेव उपाध्याय, भारतीय दरसाना. वाराणसी: चौखंभा ओरिएंटलिया, 1976.
8. अनंत राम शर्मा (एड)। सुश्रुत। सुश्रुतसंहिता. वाराणसी: चौखंभा सुरभारती प्रकाशन, 2020.
9. रामचंद्र पांडेय, सूर्यसिद्धाँटा. वाराणसी: चौखंभा सुरभारती प्रकाशन, 1999.